अध्याय 3

शिक्षण–अधिगम को प्रभावित करने वाले ज्ञानात्मक कारक

मानव व्यवहार तीन प्रकार के होते हैं– ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक। शिक्षण की समस्त प्रक्रियाओं का लक्ष्य इन्ही तीन पक्षों का अधिकतम विकास करना है। अधिगम के भी यही तीन रूप माने जाते हैं। शिक्षण में जिन प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है वह भी तीन प्रकार की होती है–

1. ज्ञान के लिए विधियाँ, जैसे–व्याख्यान,
2. करने के लिए विधियाँ, जैसे– प्रयोगात्मक तथा
3. अनुभूति के लिए विधियाँ, जैसे– नाटक, चलचित्र।

इस प्रकार शिक्षण में जो क्रियाएं की जाती हैं वे तीन प्रकार की होती हैं जिनका संबंध ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों के विकास से होता है। ज्ञानात्मक पक्ष के अधिकतम विकास के लिए स्मृति स्तर तक के शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। शिक्षण विभिन्न स्तरों के शिक्षण से विभिन्न अधिगम, परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं, जिनसे ब्लूम के ज्ञान उद्देष्य ये मूल्यांकन अथवा सर्जनात्मक उद्देष्यों तक विकास किया जाता है।

विषय वस्तु का ज्ञान

शिक्षक को यदि अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होगा या वह अपने विषय का ज्ञाता होगा तो ऐसा शिक्षक कक्षा में अपने विद्यार्थियों के समक्ष पूर्ण आत्मविश्वास

के साथ ज्ञान का प्रसार करेगा और अपने ज्ञान से विद्यार्थियों को पूर्णतः संतुष्ट कर सकेगा। ऐसा शिक्षक पाठ्यक्रम में नवीन सुधार करने में भी सक्षम होगा और अपने विषय में ज्ञाता शिक्षक, विद्यार्थियों की समस्याओं को दैनिक जीवन से संबंधित उदाहरणों के माध्यम से सरल तरीके से विद्यार्थियों को समझा सकता है। कोई भी अध्यापक अपने छात्रों को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होने पर ही प्रभावित कर सकता है। ज्ञानविहीन शिक्षक न तो छात्रों से सम्मान व आदर प्राप्त कर सकता है और न ही उनके मस्तिष्क का विकास कर सकता है। अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता होने पर ही शिक्षक आत्म–विश्वासपूर्वक छात्रों को नवीन ज्ञान प्रदान करते हुए उनके मस्तिष्क का विकास कर सकता है।

तथ्यात्मक एवं प्रक्रियात्मक ज्ञान

वह ज्ञान जिसे आप याद कर सकते हैं स्मृति में रख सकते हैं और व्याख्या कर सकते हैं तथ्यात्मक ज्ञान कहलाता है। शिक्षक परिभाषा सुनता है कहानी सुनता है उदाहरण सुनता है तो वह तथ्यात्मक ज्ञान की जॉच करता है। गणित के सूत्र याद करना, कठिन शब्द याद करना तथ्यात्मक ज्ञान के उदाहरण हैं।

कक्षा पूर्ण रूप से तथ्यात्मक ज्ञान से भरी होती है। पारम्परिक परीक्षण, लिखित या मौखिक इतिहास रिपोर्ट लेखन सब तथ्यात्मक ज्ञान के उदाहरण है हम विद्यालय में कौन, क्या, कब, कहाँ आदि प्रष्नों के उत्तर खोजते हैं इन सभी प्रष्नों के उत्तरों में तथ्यात्मक ज्ञान होता है।

अधिगम परिस्थितियाँ ज्ञान के लिए मूल आधार

राबर्ट गेने (1965) ने बताया कि अधिगम की व्याख्या साधारण सिद्धांतों से नहीं की जा सकती है। उनका तर्क है कि अधिगम के स्वरूप के संबंध में सामान्यीकरण उन अधिगम परिस्थितियों के निरीक्षण के आधार पर ही किया जा सकता है जिन परिस्थितियों में अधिगम होता है। गेने की धारणा यह है कि साधारण व्यवहार के लिए कुछ 'पूर्व आवष्यकताओं' का निर्धारण करना होता है। जैसे बोध स्तर के षिक्षण के लिए स्मृति का षिक्षण 'पूर्व आवष्यकता' होती है। गेने ने शिक्षण की परिभाषा इस प्रकार की है–

"छात्र के लिए बाह्य रूप में अधिगम परिस्थितियों की व्यवस्था करना ही षिक्षण होता है। इन अधिगम परिस्थितियों की व्याख्या में स्तरीकरण किया जाता है। प्रत्येक अधिगम परिस्थिति के लिए उनकी पूर्व परिस्थिति छात्र के लिए आवष्यक होती है। जिससे धारणा शक्ति विकसित होती है।"